

नरेन्द्र कोहली

न भूतो

न भविष्यति



व्यास सम्मान

2012

से सम्मानित

कृति



नरेन्द्र कोहली

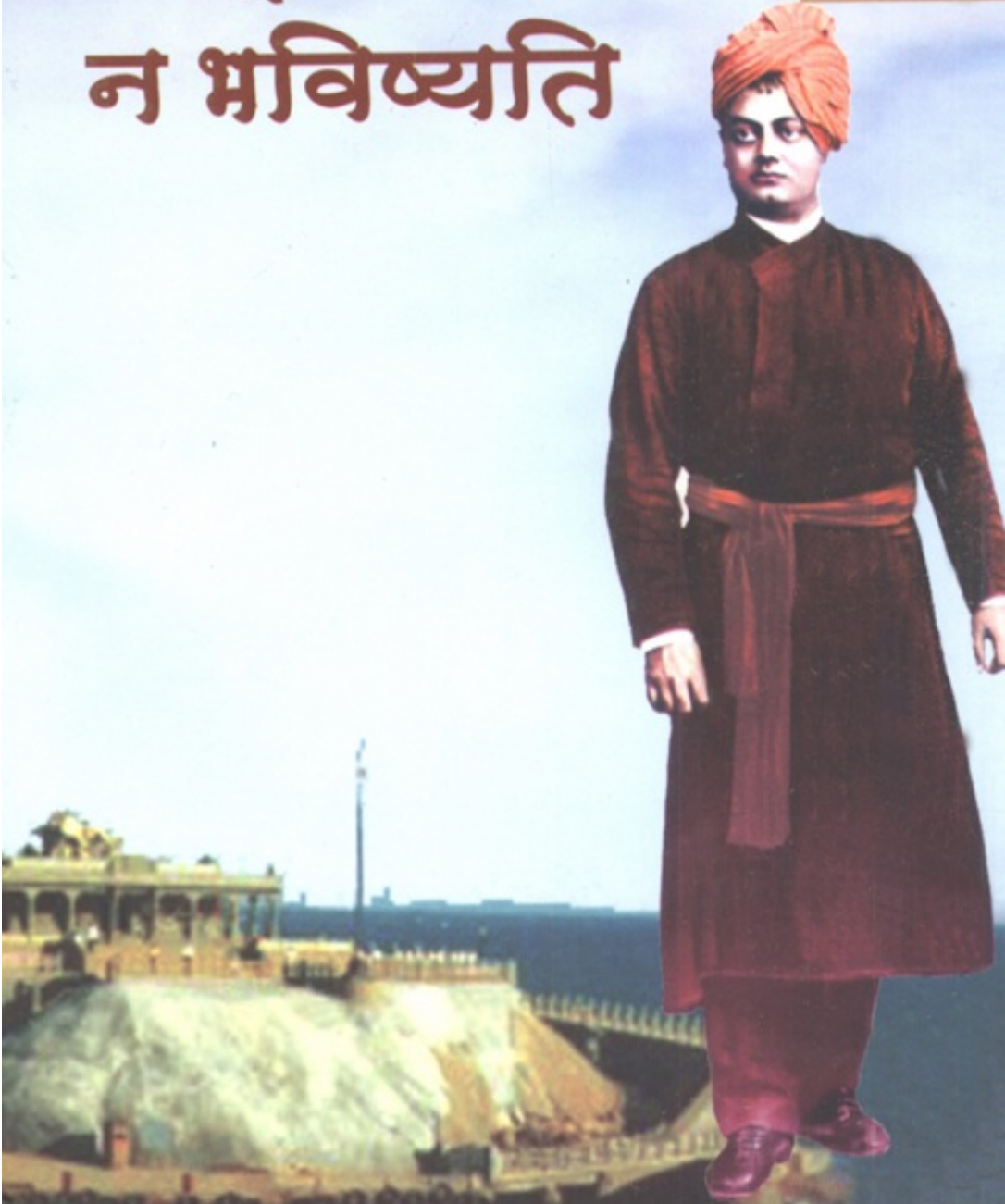
न भूतो  
न भविष्यति



व्यास सम्मान

2012

से सम्मानित  
कृति



‘न भूतो न भविष्यति’ स्वामी विवेकानन्द की जीवनी नहीं है। यह उनके लक्ष्य, कर्म और संघर्ष के आधार पर लिखा गया एक उपन्यास है।

वे संन्यासी थे, अतः सर्वत्यागी थे। मद्रास की एक सभा में उनका परिचय देते हुए कहा गया था कि वे अपना घर परिवार, धन सम्पत्ति, मित्र बन्धु, राग द्वेष तथा समस्त सांसारिक कामनाएँ त्याग चुके हैं। इस सर्वस्वत्यागी जीवन में यदि अब भी वे किसी से प्रेम करते हैं तो वह भारत माता है; और यदि उन्हें कोई दुःख है, तो भारत माता तथा उसकी सन्तान के अभावों और अपमान का दुःख है।

स्वामी विवेकानन्द ने भारत माता को अपमानित और कलंकित करने वालों के देश में पहुँचकर उनकी जनता की पंचायत में उनकी भूल दर्शाई। अपनी माँ के गौरव को स्थापित किया। स्वामी जी के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने तथा उनके कार्य का समर्थन प्रकट करने के लिए, उनके नगर कलकत्ता के नागरिकों ने जो सभा की, उसमें ‘इंडियन मिरर’ के सम्पादक ने कहा, “वाणी की उपलब्धियों के इतिहास में इससे अधिक चमत्कारिक आज तक और कुछ नहीं हुआ। एक अज्ञात हिन्दू संन्यासी अपने अर्द्धप्राच्य परिधान में एक ऐसी सभा को सम्बोधित कर रहा था, जिसके आधे से अधिक श्रोता उसके नाम का भी शुद्ध उच्चारण नहीं कर सकते थे। वह एक ऐसे विषय पर बोल रहा था जो श्रोताओं के विचारों से कोसों दूर था और उसने तत्काल उनकी श्रद्धा और सम्मान अर्जित कर लिया।”

यह उपन्यास इसी सारी प्रक्रिया का विश्लेषण करता है।

न भूतो न भविष्यति



व्यास सम्मान  
2012  
से सम्मानित  
कृति

# न भूतो न भविष्यति

नरेन्द्र कोहली



वाणी प्रकाशन



**वाणी प्रकाशन**

4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002

शाखा

अशोक राजपथ, पटना 800 004

फ़ोन: +91 11 23273167 फ़ैक्स: +91 11 23275710

[www.vaniprakashan.in](http://www.vaniprakashan.in)

[vaniprakashan@gmail.com](mailto:vaniprakashan@gmail.com)

[sales@vaniprakashan.in](mailto:sales@vaniprakashan.in)

NA BHOOTO NA BHAVISHYATI

by Narendra Kohli

ISBN : 978-81-8143-232-2

Novel

© नरेन्द्र कोहली

संस्करण 2013, 2014

आवृत्ति 2018

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से

श्रीमती आशा कुमार  
के लिए  
कृतज्ञता सहित

# 1

आधी रात हो चुकी थी। अपने मन की अशांति और व्याकुलता से संघर्ष करता, नरेन्द्र अपने कमरे में लेटा हुआ था। भयंकर ऊहापोह से उसका मन जैसे विस्फोट की स्थिति तक पहुँच गया था। विचारों के अंधड़ उसके अस्तित्व के चिथड़े उड़ा देना चाहते थे।

व्याकुलता में उसने अनेक बार विभिन्न कोणों में करवटें बदलीं; किंतु किसी करवट भी कल नहीं पड़ रही थी। जब किसी भी प्रकार लेटा नहीं रह सका, तो उठकर खड़ा हो गया। कुछ देर अपना सिर पकड़े पलंग पर बैठा रहा, और फिर विकट व्याकुलता की स्थिति में, कमरे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक चक्कर काटने लगा।

उसके मन में कुछ बिंब प्रकट हुए : धन-संपत्ति, सोना-चाँदी, प्रासाद, हाथी-घोड़े, बग़ियाँ, दास-दासियाँ, वस्त्राभूषण, भोजन व्यंजन, सुंदर स्त्रियाँ, ऐश्वर्य में लिप्त जीवन।

नरेन्द्र की व्याकुलता बढ़ गई। उसके टहलने में अधिक व्यग्रता प्रकट होने लगी, जैसे उन बिंबों से पीछा छुड़ाने का प्रयत्न कर रहा हो। बह टहलता चला गया। तब उसके मन में दूसरे बिंब प्रकट हुए : संन्यासी का जीवन, हिमालय की गुफा, वल्कल वस्त्र, सिर पर जटाएँ, तपस्या, तपस्या और तपस्या, ईश्वर से प्रेम, ईश्वर की भक्ति, ईश्वर के दर्शन, ईश्वर का साक्षात्कार। बिंबों की संख्या इतनी अधिक थी कि वे एक-दूसरे पर आरोपित-प्रत्यारोपित होने लगे।

अपने कमरे में टिके रहना असंभव हो गया। उसका दम घुट रहा था। वह कपाट खोलकर कमरे से बाहर निकल आया।

उसे लगा वह आत्मनियंत्रण खो चुका था।

विभिन्न गलियों के आल जाल के चक्कर काटता हुआ, वह मुख्य सड़क पर पहुँचा। वहाँ से वह गंगातट की ओर चल पड़ा। गंगा के जल से भीगी हवा उसके मुख से टकराई तो जैसे उसकी आत्मा सुगबुगाई : “यह उचित नहीं है। उचित नहीं है।”

“जानता हूँ।” उसने अपनी आत्मा को समझाया, “किंतु अब रुकना संभव नहीं। प्रतीक्षा नहीं कर सकता मैं। आत्मदमन की भी कोई सीमा होती है।” वह आगे बढ़ता चला गया।

गंगा का जल था कि अंधकार में एक विराट अंधकार का सागर बह रहा था। तट पर एक ओर कुछ बजरे बँधे खड़े थे। उनमें से छनकर मंद-सा प्रकाश बाहर आ रहा था। उसने अपनी दृष्टि फेर ली। दूर धारा के मध्य भी एक बजरा था, जो न चल रहा था और न ही खड़ा था। नरेन्द्र मुग्ध दृष्टि से उसकी ओर देखता रहा और फिर जैसे उसकी आँखों में एक विकट तृष्णा झलकी।